प्रवर्धन सामग्री

बायविडंग का प्रवर्धन बीज से होता है।

क्षेत्र तैयारी

वर्षारम्भ के पूर्व खेत की अच्छी तरह से जुताई कर पाटा चला कर मिट्टी भुरभुरी तथा खरपतवार रहित कर लेते है। इसी समय खेत की मिट्टी मे 5 से 10 टन जैविक खाद (गोबर की सड़ी खाद अथवा कम्पोस्ट/वर्मीकम्पोस्ट) प्रति हेक्टेयर के मान से मिलाने की अंनुशंसा की जाती है।

बीज बुबाई

बायविडंग की खेती के लिये नर्सरी मे पौधे तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। जून–जुलाई में सीधे खेत में बीज बुबाई की जाती है। बीज बुबाई सीड ड्रिल से की जा सकती है। अनुकूलतम अंतराल 1.0 मी. X 1.0 मी. है।

खूँटी लगाना

चूँकि बायविडंग एक आरोही क्षुप है, अतः इसे चढ़ाने के लिये सहारे की आवश्यकता होती है। अतः प्रत्येक पौधे के पास बाँस की एक खम्पची अथवा अन्य लकड़ी का खूंटा गाड़ देना चाहिये ताकि उनके सहारे बायविडग के पौधे चढ़ सके।

रोग एवं कीट नियंत्रण

बायविडंग के पौधों पर सामायन्यतः किसी गंभीर बीमारी अथवा कीटो का प्रकोप नहीं देखा गया हैं।

फसल विदोहन

बायविडंग के पौधों में अक्टूबर–नवम्बर तक फलन प्रारंभ हो जाता है। बुवाई के 5–6 माह बाद फल परिपक्व हो जाते है। परिपक्व फलो को हाथ से तोड़कर उन्हे छाया में सुखा लेते है।

फसल की पैदावार

बायविडंग की फसल से प्रति हेक्टेयर 190–200 कि.ग्रा. बीज प्राप्त होते है।

लागत मूल्य

बायविडंग की खेती पर लगभग रू. 75000/– प्रति हेक्टेयर लागत आती है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)
संपर्कः 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्सः 0761–2661304
ई–मेलः rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com
वेबः http://www.rcfccentral.org

बायविडंग

(*Embelia ribes* Burm. F.)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2019

बायविडंग

(*Embelia ribes* Burm. F.)

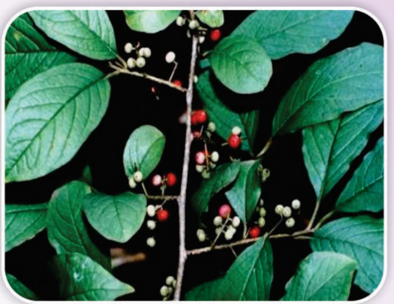

आयुर्वेदिक नाम	:	बायविडंग, बायबिरंग
हिन्दी नाम	:	विडंगा
यूनानी नाम	:	बओबरंग, बाबरंग
व्यापारिक नाम	:	बावेराना, वावरंग
वैज्ञानिक नाम	:	*Embelia ribes*
उपयोगी भाग	:	फल (बेरीज) एवं जड़

सामान्य

बायविडंग मिर्सिनेसी (Myrsinaceae) कुल का एक बड़ा, आरोही, झाड़ीनुमा पौधा है। आयुर्वेद में इसे बायविडंग, कृमिध्न, चित्रमडुला, वल्ले इत्यादि नामो से जाना जाता है। यूनानी मे इसे बाओबरंग अथवा बाबरंग कहते हैं। इसका अंग्रेजी नाम Embelia तथा व्यापारिक नाम विडंग है।

उपयोगी भाग

फल एवं जड़ें

रासायनिक संगठन

बायविडंग के बीजो मे 2.5 से 3.1 प्रतिशत embelin, 1.0 प्रतिशत quercital तथा 5.3 प्रतिशत वसायुक्त पदार्थ पाये जाते है। इनमें Schristemline नामक एल्केलाइड, एक रेजिनॉयड, टेनिन्स तथा बहुत थोड़ी मात्रा में वाष्प्शील तेल भी पाया जाता है।

चिकित्सीय उपयोग

बायविडंग के फलों के सेवन से सिरदर्द, नासाशोथ (rhinitis), नकसीर तथा अनिद्रा रोगो मे राहत मिलती है। इसके सूखे फलो का काढ़ा ज्वर, छाती तथा त्वचा रोगों के उपचार के लिये सेवन किया जाता है। त्वचा संक्रमण में इसकी लेई (paste) का लेप त्वचा पर किया जाता है। इसमें गर्भनिरोधी तथा ज्वरनाशी गुण भी पाये जाते है। फीताकृमि को निकालने के लिये दूध के साथ बायविडंग के चूर्ण का उपयोग प्राचीन काल से किया जा रहा है। खॉसी तथा अतिसार मे बायबिडंग की जड़ो का आसव दिया जाता है। Staphylococcus aureus तथा Escherichia coli जीवाणुओं के विरूद्ध बायविडंग के फलो मे प्रतिजीवाणु (antibacterial) गुण पाये जाते है। इसमें पाये जाने वाले Embeline नामक सक्रिय पदार्थ मे रेशमी तथा ऊनी कपड़ो की रंगाई का गुण पाया जाता है।

वितरण

बायविडंग का पौधा समुद्र तल से 1500 मी. की ऊॅचाई तक आर्द्र एवं छायादार स्थानो पर पाया जाता है। अतिविदोहन के कारण प्राकृतिक वन क्षेत्रो मे यह प्रजाति दुर्लभ हो गई है।

आकारिकी

यह एक लम्बा आरोही क्षुप है जिसमे लम्बी शाखाये होती है। शाखाओं मे पतले, लचीले, बेलनाकार एवं लम्बें पोट (internodes) होते है। इसकी छाल मे अनेक उभरे हुए छिद्र (lenticels) वायुमंडल और आंतरिक ऊत्तको के बीच गैस विनिमय के लिये होते है। इसकी पत्तियॉ चर्मवत (coriaceous) होती है। इनकी लंबाई 5 से. मी. तथा चौड़ाई 2 से 4 से.मी. होती है। ये दीर्घवृताकार तथा थोड़ी भाले के आकार की होती है तथा किनारे पर से नुकीली होती है। पत्तियॉ दोनो तरफ चिकनी तथा रोमरहित होती है। ऊपरी सतह चमकदार एवं अंदर की सतह थोड़ी फीकी रूपहली होती हैं। पत्तियो का आकार थोड़ा गोलाकार अथवा तीक्ष्ण होता हैं। पत्तियों में बहुत सारी मुख्य तंत्रिकायें होती है। पत्तियों के डंठल हसियेदार तथा रोमरहित चिकने होते है।

पुष्पीय लक्षण

बायविडग के पुष्प आकार मे छोटे तथा हरे–पीले रंग के होते हैं। एक पुष्प गुच्छ में बहुत सारे पुष्प लगे होते है। बाह्ययदलपुंज बहुत छोटा होता है। बाह्ययदलपुंज आपस में जुड़े होते है तथा मोटे तौर पर ये त्रिभुजाकार, अंडाकार तथा रोमिल होते है। बायविडंग का पुष्प पंचदलीय होता हे एवं इसकी पंखुडियॉ अलग–अलग होती है। पुष्प मे पाँच पुंकेसर होते हैं परंतु लंबाई में पंखुड़िया छोटी होती है। इसका पुष्पन काल फरवरी माह है। फल गोलाकार होते है तथा इनका व्यास 2.4 से 4.0 मि.मी. के मध्य होता है।फलो की सतह मस्सेदार होती है।ये कोमल तथा रसीले होते है। इनके फलों का रंग प्रारम्भ मे फीका लाल होता है जो बाद मे धुधला काला हो जाता है।

कृषि तकनीक

जलवायु एवं मृदा

बायविडंग की खेती के लिये उष्णकटिबंधीय अथवा उपोष्णकटिबंधीय जलवायु चाहिये। उत्तम जल निकासी वाली मध्यम काली मिट्टी इसकी खेती के लिये सबसे उपयुक्त है। इष्टतम तापमान 18° से 35° से. तथा औसत वार्षिक वर्षा 700–1500 मि.मी. होनी चाहिये।